Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 20/March/2023 IJRAW: 2023; 2(4):141-144 Accepted: 25/April/2023

फणीश्वरनाथ कृत "मैला आँचल" उपन्यास की रचना प्रक्रिया

*[1]डॉ. गीता संतोष यादव

*[1]सहायक प्राध्यापिका एस.एम्.आर.के.बी.के.ए.के., महिला महाविद्यालय, नाशिक, एस.एन.डी.टी.विद्यापीठ, मुंबई, महाराष्ट्र, भारत।

सारांश

"लोक या किसी जन-समाज के बीच काल की गति के अनुसार जो गूढ़ और चिन्त्य परिस्थितियाँ बड़ी होती हैं, उनको गोचर रूप में सामने लाना और कभी-कभी निस्तार का नाग भी प्रशस्त करना, उपन्यास का काम है।" विवेच्य उपन्यास में जातिवाद, सम्प्रदायवाद, छुआछूत, व्यभिचार, मठों का कुत्सित जीवन, जमींदारों का शोषण, बात-बात में झगड़े आदि को लेकर कथानक का संयोजन हुआ है।

मुख्य शब्द: 'मैला आंचल' उपन्यास, देशकाल, मेरीगंज, सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों, भाई भतीजावाद और जातिवाद, डॉ० प्रशान्त, मलेरिया आदि

प्रस्तावना

'मैला आँचल' एक आंचलिक उपन्यास है। इसमें विविध कथाओं के संयोजन के द्वारा कथानक के मैले आंचल को उघारा गया है। उपन्यास देशकाल का प्रतिबिम्ब होता है वह समाज की चित्त वृतिओं सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों को उजागर कर समाजोत्थान की महती प्रेरणा देता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा :"लोक या किसी जन-समाज के बीच काल की गति के अनुसार जो गूढ़ और चिन्त्य परिस्थितियाँ बड़ी होती हैं, उनको गोचर रूप में सामने लाना और कभी-कभी निस्तार का नाग भी प्रशस्त करना, उपन्यास का काम है।" विवेच्य उपन्यास में जातिवाद, सम्प्रदायवाद, छुआछूत, व्यभिचार, मठों का कुत्सित जीवन, जमींदारों का शोषण, बात-बात में झगड़े आदि को लेकर कथानक का संयोजन हुआ है। मलेरिया सेन्टर के डॉ० प्रशान्त के द्वारा इन बिखरी हुई बहु कथाओं को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया है। डॉ० प्रशान्त सेवाव्रती और सुधारक के रूप में सामने आकर समस्त समस्याओं का समाधान करते हैं

कथानक का प्रारम्भ मेरीगंज आंचल के परिचय से होता है। मेरीगंज में बारहों वर्ण के लोग रहते हैं। यह गाँव पाकिस्तान और नेपाल की सीमा से लगा हुआ है। बरसात में नदी भर जाती है। यह आंचल मलेरिया और कालाबुखार से ग्रस्त है। राजपूत और कायस्थ यहाँ की प्रमुख जातियाँ हैं। ब्राह्मण एक तीसरी शक्ति के रूप में है। यादवों का दल भी जोर पकड़ रहा है। सारे मेरीगंज में मात्र दस आदमी ही थोड़े से पढ़े-लिखे हैं। यादवों का मुखिया बेलावन यादव है। चन्नतपट्टी का बालदेव भी यादव टोली में आकर रहने लगता है। संथाल बाहर से आये हैं। वे गाँव के बाहर रहते हैं। गाँव की आबादी पोलिया टोली, तन्त्रिमा छत्री-टोली, यदुवंशी छत्री-टोली, गहलोल छत्री टोली, अभिजात्य ब्राह्मण टोली, धनुरूधारी छत्री-टोली, कुशबाहा छत्री-टोली और रैदास टोली में बँटी हुई है गाँव का मठ हलचल का केन्द्र है। सेवादास महन्त है। उसका शिष्य रामदास है। महन्त सेवादास का कोठारिन से अवैध सम्बन्ध है। इसमें ग्राम-जीवन से सम्बन्धित समस्त समस्याओं का रेणु जी ने चित्रण किया है। इस उपन्यास में निम्नलिखित समस्याएँ ज्वलन्त रूप में सामने आई हैं।

१. राजनीतिक समस्याएँ

(क) राजनीति के सम्बन्ध में अज्ञानता एवं चुनाव में दलबन्द

(ख) चुनाव में दलबन्दी।

(ग) थोथा अहिंसावाद।

२. धार्मिक समस्याएँ

(क) ग्रामों में व्याप्त अन्धविश्वास।

(ख) मठों और मन्दिरों में व्याप्त भ्रष्टाचार।

३. आर्थिक समस्याएँ

४. सामाजिक समस्याएँ

(क) जाति-पांति और ऊँच-नीच का प्रभाव।

(ख) प्रेम-विवाह का प्रश्न।

(ग) अनैतिक यौन सम्बन्ध। (घ) आदिवासियों को समस्या।

५. बीमारियाँ और उनके मुक्ति की समस्या

आलोच्य उपन्यास के घटनाकाल में जहाँ नगरों में स्वतंत्रता के आन्दोलन व्यापक रूप से चल रहे थे, वहां ग्रामों में इन आन्दोलन का कोई प्रभाव नहीं था। वे आन्दोलन के नाम पर चौंक पड़ते थे। वे अपनी घोर अशिक्षा के कारण स्वतन्त्रता

*Corresponding Author: डॉ.गीता संतोष यादव

आन्दोलनों का महत्व समझने में असमर्थ थे। और उनका राजनीतिक गतिविधियों से कोई सम्बन्ध नहीं था। नेता के भाषण कर उनकी दृष्टि में कोई महत्व नहीं था। अंदोलन एवं जन-जागरण के जुलूस उनके लिए तमाशा भर थे। बालदेव स्वतंत्रता प्राप्ति पर जो उलूस निकाला है, ग्राम वालों के लिए तमाशा बन जाता है। आलोच्य उपन्यास में बालदेव, बावनदास आदि ग्रामीणों में राजनीतिक चेतना जाग्रत करते हैं।

चुनावों में जातिवाद, भाई भतीजावाद और जातिवाद का बोलबाला है। दलबन्दी ने स्वस्थ राजनीति को कुंठित बना दिया है। शक्ति सम्पन्न और पैसे वाला ही चुनाव में उतरने का साहस कर सकता है। डाक्टर राम-किरनपाल सिंह संघ के स्वयंसेवकों के लाठी के बल से चुनाव जीतना चाहते हैं। कालीचरन उनके षड्यन्त्र का भंडाफोड़ करता है। भंडारे के समय भी यही जाति-वाद सामने आता है। आलोच्य उपन्यास के कथानक में जनसंघ, सोशलिष्ट, कांग्रेसी, कम्युनिष्ट-सभी अपने-अपने दल के प्रचार कार्य में लगे दिखाई देते हैं। सभी दलितों के हित की बात कहकर मत हथियाना चाहते हैं। जनसंघ के काली 'टोपी वाले संयोजक मुसलमानों का विरोध करके हिन्दू साम्राज्यवादी स्थापना का स्वप्न देखते हैं। वे हिन्दू संस्कृति के प्रचार-प्रसार का दावा भरते हैं। साम्यवादी दल का वासुदेव उनको बुद्धू कहता है बालदेव काँग्रेस का तिरंगा झंडा उठाये फिरता है। गन्दी राजनीति में डॉ.प्रशांत जैसे समाजसेवी साम्यवादी होने के सन्देह में गिरफ्तार कर लिए जाते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में राजनीतिक चेतना का जीवन्त आकलन हुआ है। विभिन्न राजनीतिक मतवाद, पार्टियों, संगठन और उनकी समस्याएँ, वर्ग संघर्ष आदि का चित्रण इस उपन्यास में विस्तार से हुआ है। कथानक से यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रामों में भी राजनीतिक हलचल का प्रसार हो रहा है।

थोथा अहिंसावाद राजनीतिक भ्रष्टाचार को जन्म देता है। देशभक्त आजादी के लिए वहाँ प्राणों का बलिदान दे रहे है, वहाँ अवसरवादी तथा स्वार्थी राजनीतिज्ञ हिंसा की आड़ लेकर जनसाधारण का शोषण कर रहे हैं। नगरों की तरह ग्रामों में भी राजनीति भ्रष्टाचार व्याप्त हो गया है बालदेव जैसे अवसरवादी नेता अहिंसा का नारा देकर जनता को प्रभावित करते हैं और अपने त्याग एवं बलिदान का मूल्य व्याज सहित वसूल करते हैं। बालदेव रोशन की पर्चियाँ अपने परिचितों में ही बाँटता है। बालदेव अहिंसा की आड़ लेकर लक्ष्मी तथा रामदास के अधिकारों के हनन करने वाले पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए भी नहीं हिचकता। इस कार्य में वह कालीचरण के विरोध की भी परवाह नहीं करता। वह बावनदास के पत्रों को इसलिए नष्ट करने का प्रयत्न करता है कि इनके प्रकाशित हो जाने पर बावनदास देश-भक्त के रूप में सम्मानित हो जाएगा। प्रस्तुत उपन्यास में राजनीतिक भ्रष्टाचार का नग्न रूप सामने आता है। दुचारचंद कापरा तथा घोटनबाबू जैसे भ्रष्टाचारी अहिंसा की आड़ लेकर कांग्रेसी बन जाते हैं और सत्ता हथिया कर देश को नष्ट उनके वाले कुकृत्य करते हैं। उन कुकृत्यों का विरोध करने के कारण ही बावनदास की हत्या होती है।

मैला आँचल उपन्यास में धार्मिक-समस्याओं का भी विस्तृत फलक सामने आता है। समाज को अनेक प्रकार की धार्मिक रूढ़ियॉ एवं अन्धविश्वास खोखला कर रहे हैं। अशिक्षा के कारण ग्रामीणों को धार्मिक चेतना कुंठित है। वे पाखण्डी ओझा तथा ज्योतिषियों के विश्वास के जाल में फंसे हुए हैं। ये सभी मिलकर गाँव वालों का शोषण करते रहते हैं। ये लोग प्रत्येक सुधार तथा नवीनता का विरोध करते हैं। मेरीगंज में अस्पताल खुलता है। ज्योतिषी जी ग्रामवालों को एलोपैथिक दवाओं के विरुद्ध भड़काते हैं। उनसे कहते हैं कि इन दवाओं के प्रयोग से सारे शरीर में विष व्याप्त हो जायगा। डाक्टर सुई से शरीर में विष का प्रवेश कर देता है 'लाल दवा शरीर को कमजोर कर देती है। ग्रामों में अन्धविश्वास के कारण विधवा स्त्रियों को डाइन समझा जाता है। गणेश मेरीगंज के ग्रामीण की नानी को डायन मानते हैं। वह रात में बच्चों का रक्त पीकर नृत्य करती है, इसी अन्धविश्वास से ग्रस्त हीरू नामक किसान उसकी हत्या कर देता है। ज्योतिषी जी अपनी चतुर्थ पत्नी को डाक्टरी दवा नहीं देते। उसकी मृत्यु हो जाती है। उपन्यासकार यह सन्देश देता है कि शिक्षा के प्रसार से ही ग्रामीणों में से अन्धविश्वास को दूर किया जा सकता है

मठों में व्याप्त भ्रष्टाचार-गाँवों के मठ और मन्दिर पाप कर्म और भ्रष्टाचार के अड्डे बने हुए हैं मठों के महन्त तथा उनके शिष्य व्यभिचार में लिप्त हैं। सत्संग, बीजक-पाठ, निर्गुण वाणी आदि की आड़ में युवतियों का सतीत्व लूटा जाता है। मठों के महन्त गांजा, सुलफा, चरस आदि की दम लगाते हुए व्यभिचार को बढ़ाते हैं। इस प्रकार मठ और मंदिर में धर्म की आड़ में व्यभिचार के अड्डे बन गये हैं। आलोच्य उपन्यास में इस धार्मिक व्यभिचार का यथार्थ चित्रण हुआ है। लक्ष्मी महन्त की पाप-वासना का शिकार हो जाती है। रेणु जी ने अन्त में लक्ष्मी ने चरित्र का जो उत्थान दिखाया है, वह प्रेरणाप्रद है।

'मैला आंचल' उपन्यास में आर्थिक समस्याओं, शोषण और आर्थिक विषमता का यथार्थ चित्र प्रस्तुत हुआ है। धनी निर्धन एवं शोषक-शोषितों के बीच की खाई निरन्तर चौड़ी होती जा रही है। धनी व गरीबों क शोषण करके अपने लिए प्रत्येक प्रकार की सुविधा जुटा लेता है। वह उच्च अधिकारियों को डाली तथा रिश्वत आदि देकर अपने पक्ष में कर लेता है। बस उनकी आड़ में गरीबों का शोषण करता है। तहसीलदार साहब को दी जाने वाली डाली के पचास रुपये गरीबों से वसूल करने की बात कहते हैं। शोषित वर्ग इतना असहाय हो रहा है कि रात-दिन परिश्रम करके भी अपने पेट का पालन नहीं कर पाता और न उसे शरीर ढकने को वस्त्र ही मिल पाते हैं। उनकी स्त्रियों को भी पूरा शरीर ढकने के लिए वस्त्र नहीं मिल पाते। गाँव के किसानों को जमींदार का बंधुआ मजदूर बनकर काम करना पड़ता है। वह ऋण ग्रस्त हो जाता है और जीवन में ऋण कभी नहीं चुका पाता और मरने के बाद ऋण का बोझ अपने पुत्र के सिर छोड़ जाता है। जमींदार किसानों से एक के दस वसूल करते हैं। ग्राम्य-जीवन के अर्थ-वैषम्य वर्ग-भेद, निर्धनता, ऋण, मँहगाई आदि की ज्वलन्त समस्याओं को रेणु जी ने उठाया है और अन्त में जमींदार (तहसीलदार) द्वारा प्रत्येक भूमिहीन को पांच वीघा भूमि दिलवाकर समस्या का समाधान भी प्रस्तुत किया है। संथाल अपने अधिकारों के लिए विद्रोह करते देखे जाते हैं। आलोच्य उपन्यास का 'मेरी-गंज' गाँव 'भारत का प्रतिनिधि गांव है। 'मेरीगंज' के कथानक का वर्णन करते हुए रेणु जी ने ग्रामों में व्याप्त समस्त सामाजिक समस्यायों को उठाकर उनका समाधान प्रस्तुत किया है। मुख्य सामाजिक समस्याएँ निम्नलिखित आई हैं।

१. जाति-पति तथा ऊँच-नीच की समस्या,

२. प्रेम विवाह की समस्या

३. अनैतिक यौन सम्बन्धों की समस्या,

४. आदिवासियों की समस्या।

गाँवों में जाति-पांत तथा ऊँच-नीच की समस्या सुरक्षा के समान विस्तार पाती जा रही है। सारा मेरीगंज गाँव कई जातिगत टोलियों में बँटा हुआ है। एक टोली अपने से दूसरी टोली को हीन समझती है। राजपूतों और यादवों में जातिगत स्पर्धा शत्रुता का रूप ले लेती है। ब्राह्मण टोली दोनों को लडाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करती हैं। विश्वनाथ प्रसाद कानून की आड़ में अपने स्वार्थ की सिद्धि करते हैं। सारा मेरीगंज गाँव जात-पाँत और ऊँच-नौच के रोग से बुरी तरह ग्रस्त है। खिलावन सिंह यादव भंडारे में इसलिए नहीं जाते क्योंकि उन्हें सम्मानपूर्वक बुलाया नहीं गया है। मेरीगंज में तंत्रिमा टोली के व्यक्ति को दूसरी जाति के लोग अपने पास फटकने नहीं देते। उनको कुएं से पानी तक भरने नहीं दिया जाता है, परन्तु ब्राह्मण तक व्यभिचार में लिप्त हैं--"गाँव का ब्राह्मण चमारिन, भंगन को कुएँ से पानी तो भरने नहीं देता, किन्तु उसके साथ रात काट सकता है।" सहदेव मिसिर फुलिया के यौवन का उपभोग करता है, परन्तु उसके हाथ का छुआ खाने में संकोच करता है।

रेणु जी ने 'मैला आंचल' उपन्यास में प्रेम-विवाह तथा अन्तर्जातीय विवाह की समस्या को उठाया गया है। इस उपन्यास के प्रायः सभी पात्र या तो अज्ञात

कुलशील हैं या जाति-पाँति की रूढ़ियों को तोड़ने वाले हैं। डॉ० प्रशांत मेरीगंज गाँव में मलेरिया सेन्टर के इन्चार्ज बनकर आते है। कमला गांव के तहसीलदार और बड़े जमींदार विश्वनाथ प्रसाद की पुत्री है। प्रशांत समाज-सेवक है। वह प्रयास करके मेरीगंज के मलेरिया सेन्टर पर अपनी नियुक्ति कराता है। "मैला आँचल" की सारी बिखरी हुई कथाएँ उसकी कथा से सम्बंधित हो जाती है। मेरीगंज आते ही प्रशान्त मलेरिया, कालाजार और हैजा के निवारण के लिए युद्धस्तर पर प्रयास प्रारम्भ कर देता है। गांव की मिट्टी और प्रकृति से उसे अपार मोह है। पन्द्रह बीस गाँवों की दयनीय स्थिति का यह निरीक्षण कर चुका है। मलेरिया, हैजा और कालाजार की अचूक औषधियों की उसने खोज की है। उनके सफल परीक्षण किए। मेरीगंज अंचल से इन बीमारियों का भीषण प्रकोप दूर हो गया है। प्रशान्त रात-दिन मरीजों को देखने और उनको दवा देने में लगा रहता है। इसी सन्दर्भ में वह तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद की पुत्री कमला को देखने जाता है उसे बेहोशी के दौरे जाते हैं। वह प्रतिदिन आकर उसे देखता, मीठी दवा देता और अपने ट्रांजिस्टर से उसके मस्तिष्क को झकझोरता। डाक्टर प्रशांत और कमला नित्य प्रति के सम्पर्क में आने के कारण प्रणय-सूत्र में आबद्ध हो जाते हैं। प्रशान्त कमला के साथ में मधुरता और प्रसन्नता का अनुभव करता है। कमला मलेरिया सेन्टर में भी जाने लगती है। प्रणय शारीरिक सम्बन्ध में बदल जाता है और कौमार्यावस्था में ही कमला गर्भवती हो जाती है। मेरीगंज में सोशलिष्ट, ग्रेसी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और कम्युनिस्ट आंदोलन उभरता है। पुलिस अधिकारियों को प्रशान्त के कम्युनिस्ट होने का सन्देह होता है। संथालों को भड़काकर झगड़ा कराने का अपराध लगाकर उसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया जाता है। इधर गर्भवती कमला की स्थिति दिन-प्रति-दिन दयनीय होती जाती है। उनकी माँ तथा पिता विश्वनाथ प्रसाद चिंताओं में विक्षिप्त से हो जाते हैं। कमला प्रशान्त के नाम पत्र लिखकर प्यारू को देती है-'प्राणनाथ'पता नहीं, समय पर यह पत्र तुमको मिले या न मिले, देर हो या सवेर, कभी भी मेरी यह चिट्ठी तुम्हें मिल ही जायगी। मुझे पूरा विश्वास है। तुम मेरे पास दौड़े आओगे!... तुम जानते हो, अब मुझे डर लगने लगा है। "तुम्हारा... तुम्हारा कैसे लिखूं? माँ कहती है, यदि तुम किसी तरह बाबा को लिख दो या मालूम करा दो कि "मेरी होने वाली सन्तान के तुम पिता हो तो मैं जी जाऊँ। विश्वास नहीं करती माँ ! बाबूजी अब एकदम पागल हो गये हैं। न जाने क्या है तुम्हारी किताबों ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है। मुझे कितना बड़ा सहारा मिला है। तुम्हारी किताबों से ! लेकिन अब एक नई किताब चाहिए। जिसके पृष्ठ-पृष्ठ में लिया हुआ हो-कमला विश्वास करो। डरो मत ! जो होगा मंगलमय होगा। "यह पत्र स्टेशन बैगन में मेरीगंज आते हुए प्रशान्त को ममता की आंख बचाकर प्याक दे देता है। प्रशान्त कमला को पत्नी रूप में स्वीकार करता है। नये जन्में पुत्र कुमार नीलोत्पल की बरही धूम-धाम से मनाई जाती है। इस अवसर पर प्रशान्त ममता के समक्ष प्रतिज्ञा करता है-" ममता मैं फिर काम शुरू करूँगा-यहीं इसी गाँव में प्यार की खेती करना चाहता हूँ। आँसू से भीगी धरती पर प्यार के पौधे लहलहायेंगे। मैं साधना करूंगा, ग्रामवासिनी भारतमाता के 'मैले आंचल के तले कम-से-कम एक ही गांव के कुछ प्राणियों के मुरझाये ओंठों पर मुस्कराहट लौटा सकूं। उनके हृदय में आशा और विश्वास को प्रतिष्ठित कर सकूँ। "यहीं प्रशान्त और कमला की मुख्य कथा की समाप्ति के साथ कथानक समाप्त होता है।

डॉ० प्रशान्त और बाबा बावनदास अज्ञात कुल-शील हैं, लक्ष्मी जाति-बन्धनों से मुक्त हो चुकी है। कमली अज्ञात कुलशील वाले युवक प्रशान्त को वरण करती है। रेणु जी जाति-पांति विरोधी हैं और इस उपन्यास में भी उन्होंने जाति-पति के बन्धनों को तोड़ा है। प्रेम-विवाह का भी 'मैला आंचल' उपन्यास में समर्थन किया गया है। कमली के पिता विश्वनाथ कमली और प्रशान्त के विवाह में बाधक नहीं बनते कमली विवाह से पूर्व ही डॉ० प्रशान्त से गर्भवती हो जाने और डॉ० प्रशान्त द्वारा पत्नी रूप में स्वीकार कर लेने से आलोच्य उपन्यास में प्रेम-विवाह और अन्तजातीय विवाह का समर्थन हो जाता है। मंगला और कालीचरण के बीच में भी यही स्थिति है। लक्ष्मी और बालदेव विजातीय हैं। लक्ष्मी प्रेम के कारण ही बालदेव के घर जाती है। यहाँ रेणू जी विवाह –संस्थान का बहिष्कार करते हुए दिखाई देते हैं। रेणू जी ने सामजिक संकीर्णताओं को तोड़ने के लिए प्रेम-विवाह को समाधान के रूप में स्वीकार किया है। घर-घर घूमकर सुमरितदास जी प्रचार करता है, उसमें विवाह संस्थान को नकारा गया है। "तुम लोग तो जानते हो, पाँच पंच को जनाकर जब जब शादी की बात पक्की हुई एक न एक विघन पड़ गया। इसलिए काशी के पंडितों ने गंधरव विवाह की बात किसी को मालूम नहीं होने दी जाती है।"------

मेरीगंज गाँव में मठ की कथा का विस्तार अधिक है। यह प्रशान्त और कमला को मुख्य कथा के साथ कथानक के अन्त से कुछ पहले तक चलती है। अनैतिक यौन सम्बन्ध की समस्या एक सोचनीय समस्या है। "मैला आँचल" के सभी पात्र इस कुत्सिक समस्या के पात्र हैं। गाँव के मठ में महन्त सेवादारा, कोठारिन लक्ष्मी, रामदास और लक्ष्मी तथा लक्ष्मी वालदेव के व्यभिचार की हलचल आती है। फुलिया, रमपियरिया का उन्मुक्त यौन-विलास भी 'मैला आँचल' के दागों को उजागर करता है। प्रशान्त गांव के इन दागों को हटाने का प्रयास करता है। अतः इन समस्त बिखरी कथाओं का सम्बन्ध प्रशान्त और कमला की कथा से हो जाता है। बावनदान और बालदेव जैसे समाज सेवियों का सम्बन्ध भी मठ से है। कोठारिन लक्ष्मी के कहने से बलदेव कंठी भी धारण कर लेता है। मठ के महन्त सेवादास हैं। लक्ष्मी मठ की कोठारिन है। रामदास कीर्तन के समय खंजड़ो बजाता है। मठ पर विशाल भण्डारे का आयोजन होता है। महन्त सेवादास का लक्ष्मी से अनैतिक सम्बन्ध है। वह अन्धा होकर मरता है। सेवादास के मरने के पश्चात् बाहर से आये लरसिंहदास और रामदास में होड चलती है। लरसिंहदास को भगा दिया जाता है और रामदास महन्त हो जाता है। रामदास का भी सेवादास की तरह लक्ष्मी से यौन-सम्बन्ध चलता है। बाद में रामदास रमपिरिया को रख लेता है और लक्ष्मी बालदेव के साथ दूसरा मठ स्थापित कर लेती है। इस सहायक कथा का मुख्य कथा से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित नहीं हो पाता। डॉ.प्रशांत और कमला का अवैध सम्बन्ध है। इसके परिणाम स्वरुप पुत्र होता है, परन्तु डॉ.प्रशांत कमला को पत्नी रूप में स्वीकार कर आदर्श रूप प्रस्तुत करते हैं। आलोच्य उपन्यास के मुख्य पात्र डॉ० प्रशान्त और कमला हैं। सारे कथानक में इनकी स्थिति रहती है। उपन्यासकार ने इस मुख्य कथा के साथ में कई सहायक पात्र हैं। महंगूदास की पुत्री फुलिया से सहदेव मिश्र यौन सम्बन्ध बनाये हुए हैं। यह फुलिया खलासी जी के साथ भाग जाती है। बाद में उनको छोड़कर रेलवे के सिगनलमैन के यहाँ बैठ जाती है।

आदिवासियों को समस्या का भी बखूबी चित्रण मैला आँचल में हुआ है। मेरीगंज में संथाल बाहर से आकर रहे हैं। उनको गाँव से बाहर बसाया जाता है। जमींदार द्वारा उनका शोषण होता है। बीमारियों और उनसे मुक्ति की समस्या का भी जीवंत वर्णन विवेचित उपन्यास में हुआ है। बीमारियों और उनसे मुक्ति गाँव की प्रमुख बड़ी समस्या है। यह समस्या मेरीगंज जैसे तराई के गांवों में मलेरिया, हैजा और कालाजार के रूप में भीषण रूप धारण करती है। आलोच्य उपन्यास में इस समस्या को डॉ. प्रशांत के द्वारा बड़ी सफलता से सुलझाया गया है। गाँव के तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद प्रभावशाली व्यक्ति हैं। राजपूत टोली के ठाकुर रामकृपाल सिंह भी अपना काफी प्रभाव रखते हैं। मार्टन की कोठी की भूमि में मलेरिया सेन्टर की स्थापना होती है। भवन के निर्माण में गांव के सभी लोग सहयोग देते हैं। ज्योतिषी जी मलेरिया सेन्टर की आलोचना भी करते हैं। डॉ० प्रशान्त बड़ी लगन से गाँव के दुख-दर्द में सम्मिलित होते हैं। वे गाँव की प्रत्येक समस्या को सुलझाने का प्रयास करते हैं। वे जेल से छूटकर आते हैं और कमला को पत्नी रूप में स्वीकार कर उसका उद्धार करते हैं। उनके रूढ़िखण्डन के साहसिक कार्य के साथ ही कथानक समाप्त होता है।

निष्कर्ष

अस्त: कह सकते हैं कि मैला आँचल उपन्यास आँचलिक उपन्यासों की श्रेणी में

मील का पत्थर साबित होता है । जो तत्कालीन भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और भाई भतीजावाद की प्रवित्तिओं को दर्शाता है । गाँव में व्याप्त अंधविश्वास और परम्परागत रूढ़िओं और मान्यताओं को खुला चित्रण करता है। दलगत राजनीति और परिवेशगत अशांति का चित्रण करता है। किन्तु प्रशांत और कमली के विवाह से टूटती हुई लोक आस्थाओं को को बिखरने से बचाता भी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मैला आँचल: लेखक: फणीश्वर नाथ रेणू:प्रकाशक::राजकमल प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष २०१६
2. मैला आँचल वाद-विवाद और संवाद : संपादक : भारत यायावर:प्रकाशक::आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, प्रकाशन वर्ष २००६
3. फणीश्वर नाथ रेणु और मैला आँचल :श्री राकेश :प्रकाशन केंद्र, डालीगंज रेलवे क्रासिंग, सीतापुर रोड, लखनऊ।
4. देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चरित्र-शिल्प: डॉ. वंदना प्रदीप :प्रकाशक :ज्ञान प्रकाशन, किदवई नगर, कानपुर।
5. तीसरी दुनिया का यथार्थ एक मूल्यांकन :संपादक :डॉ जयश्री एस.टी.:प्रकाशक :: विकास प्रकाशन कानपुर।
6. किन्नर समाज संन्दर्भ तीसरी ताली :: पार्वती कुमारी :प्रकाशन :वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।